ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292 PP. NO.- 327-328
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महामारी कारण एवं निवारण

मनोज कुमार सिंह

असि0 प्रोफेसर (यू0जी0यी0नेट/जे0आर0एफ0) प्राचीन इतिहास विभाग,

अवधूत भगवान राम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनपरा– सोनभद्र (उ0प्र0) भारत

Received- 22.07.2020, Revised- 24.07.2020, Accepted - 26.07.2020 E-mail: manojkumar5865@gmail.com

सारांश : ***1. कोरोना के इक जोर पे ऐती है ये दुनियाँ। मृत्यु के डर से अपने–अपने घर मे बैठी है ये दुनियाँ विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) ने 11 फरवरी 2020 को कहा कि घातक कोरोना वायरस का अधिकारिक नाम कोविड–19 (COVID-19) होगा। विश्व स्वास्थय संगठन के प्रमुख ट्रेडोस एधानोम गेब्रेयेसुस ने जिनेवा मे कहा अब हमारे पास बीमारी के लिए नाम है और यह (कोविड 19) है। उनहोने नाम की व्याख्या करते हुए कहा कि को का मतलब कोरोना वि का मतलब वायरस और डि का मतलब डिसीज (बीमारी) है। साथ ही 19 उस वर्ष के लिए जिसमें यह वायरस सामने आया था। इस विषाणु की पहचान पहली बार 31 दिसम्बर, 2019 को चीन में हुई थी। उल्लेखनीय है कि भारत में कोरोना वायरस के बारे में विशेष निगरानी प्रणाली पर रिपोर्ट देने वाला नगालैण्ड पहला राज्य बना है।'***

कुंजीभूत शब्द– कोरोना, दुनियाँ, कोविड–19, विश्व स्वास्थय संगठन, ट्रेडोस एधानोम गेब्रेयेसुस, बीमारी।

''आज का युग विज्ञान का युग है''। प्रतिदिन नए–नए शोध हो रहे है। चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ, भौतिकी और रसायन के क्षेत्र में भी देश–दुनियाँ के वैज्ञानिकों ने अद्भुत खोज किये हैं, और लगातार कर ही रहे हैं परन्तु विगत तीन–चार माह से हम लोग देख रहे हैं कि कोरोना जैसे वायरस संक्रमण हमारे बीच में महामारी कारुप धारण कर चुका है। इससे दुनिया के तमाम विकसित देश रोक पाने में अक्षम सिद्ध हो रहे है। एक तरफ विश्व के तमाम विकसित देश जो स्वास्थ्य रैंकिंग में आगे है–जैसे–अमेरिका, इटली, स्पेन, इंग्लैण्ड जहाँ के राजा–रानी भी कोरोना के चपेट में आ चुके है, और वहाँ हजारो–हजार की तादात में लोग कुछ घन्टो में ही मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं। कोरोना संक्रमण एक कोरोना नामक वायरस से फैलता है। जो खाँसते या छींकते वक्त एक आदमी से दूसरे आदमी में फैलता है। सामूहिक रुप से यह परमाणु बम के न्यूट्रान से भी तेजी से एक से अनेकों में बढ़ता ही रहता है। इस रोग की उत्पत्ति चीन के बुहान शहर हुई।

चीन जो दुनियाँ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख रहा है यह उसकी राजनैतिक चाल है। जिसने शुरुआत के दो–तीन महीनें विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) जिसका प्रहरी अमेरिका है और अन्य देशों को इसकी जानकारी नहीं दी तथा बुहान और एकाघ शहर को छोड़कर अपने देश में घर में कैद (लॉक डाउन स्वबाकवूद) जारी रखा। इसके बावजूद भी ये सर्वविदित है, कि शुरुआत में सबसे ज्यादा मौते चान में हुई, परन्तु समय के साथ वह नियंत्रण पा लिया। इटली, अमेरिका, स्पेन जैसे यूरोपीय देश मौत के कारण वीरान हो गए।

अब बात अपने देश भारतवर्ष की चर्चा की जाय तो यहाँ मरने वालों की संख्या और देशों की अपेक्षा काफी कम है, परन्तु कोरेाना–वायरस का संक्रमण हमारे देश में काफी फल–फूल रहा है। फिर भी राज्य सरकारों के सहयोग व संघ सरकार की आपसी सामंजस्य बिठाकर हम देश में लॉक डाउन (Lockdown) का पालन करके इसके फैलते महामारी व मृत्युदर पर अंकुशलगा पाने में अब तक सफल रहे है। परन्तु समय से यदि हम अन्तराष्ट्रीय आवागमन के लिए लॉक–डाउन का पालन करते तो संभवतः एक भी कोरोना मरीज हमारे देश में नहीं देखने–सुनने को मिलते। फिर भी सरकार व स्थानीय प्रशासन के साथ–साथ लोगों ने अपनी सहभागिता दिखाई है, और अपनी–अपनी जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाया है। इसका टीका अभी विकसित नहीं हुआ है। टीका विकसित होने में कम से कम एक वर्ष लगेगा। विकसित देश अमेरिका व अन्य देशों में अनुसंधान जारी है। सुनने में यह भी आ रहा है कि चीन चोरी छिपे टीका विकसित करके अपने नागरिकों को कोरोना संकट से उबार पाने में और अपने देश में होनेवाली मौतों पर रोक लगाने में सफलता पर गया है। सबसे पहले इसके मरीज चीन के बाहर ताईवान में पाया गया था। जाँच–पड़ताल करने के बाद पता चला कि वह कुछ दिन पहले बुहान (चीन) से वापस लौटा था। फिर हर देश में रोगी मिलने से पूरी दुनिया में खलबली मच गई।

यह संक्रमण तीन फेज (चरण) में होता है और तीसरे फेज में काफी तेजी से मौतो का सिलसिला जारी

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

रहता है। प्रथम फेज में शोधो व इलाजो से पता चलता है कि, मलेरिया की दवा (1) क्लोरोक्वीनीन व (2) एजिथ्रोमाइसिन दवा चलाकर संक्रमण को फैलने से व रोगी को मरने से बचाया जा सकता है। चूँकि ज्यादा खुशी होने की बात यह नहीं है कि विश्व में मलेरिया की दवा हमारे पास सबसे ज्यादा है, इसकी प्रमुख वजह है गंदगियों द्वारा मच्छरों का काफी वृद्धि और इस तरह उससे बचने का उपाय करना।

टाज अमेरिका, ब्राजील, स्पेन, ब्रिटेन, रुस व अन्य देशों में हमारे यहाँ से मलेरिया की दवा भेजी जा रही है, जिससे वहाँ नियन्त्रण पाया जा रहा है, परन्तु इसका स्थायी उपचार हमारे डाक्टरों के पास नहीं है। एक ही बात सत्य है कि इसे फैलने से रोका जाए।

"Prevention is better than Care" जिसके लिए सामाजिक अलगाव और लॉक–डाउन का पालन जरुरी है, परन्तु सरकार को दिन–प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुओं खन–पान, दाल–सब्जी तथा दवाईयों की पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए। सबसे ज्यादा समस्या प्रतिदिन कमाने वाले कामगारों व मजदूरों की है, जो नित–प्रतिदिन काम करते है तो उनको भोजन मिलता है। इनके साथ–साथ शहरी कामगारों व मजदूरों को भी खाली हाथ गाँव लौटना पड़ रहा है। सरकार इनको घर आने के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं करवा पा रही है। जिससे वे आए दिन पैदल यात्रा करके सप्ताह भर चलकर भूखे–प्यासे लौट रहे है। चिलचिलाती धूप में कितने परिवार के बच्चे बीमार होकर मर जा रहे है। अनेक परिवार के लोग तो सड़क–दुर्घटना में मर गए है। ''किसी विश्लेषक ने ठीक ही शंका जाहिर किया है, कि कोरोना से ज्यादा भारत में लोग भूखे ही मरेंगे''। यह वाक्य सही होता दिखाई दे रहा है।

सरकार राहत व बचाव कार्य हेतु हरेक खाताधारक को महिने में रुपये व राशन (चावल/गेहूँ) मुत देने की आकर्षक घोषणा तो करती दिखती है, परन्तु धरातल पर राज्य व केन्द्र सरकार दोनों असफल सिद्ध हो रही है। हाँलाकि छोटे–बड़े शहरों में समाजसेवी संगठन आगे आ रहे हैं। इससे सीख लेकर अन्य सक्षम लोगों को आगे आकर सहायता करनी चाहिए, जिससे वंचित लोगों को भोजन मिल जाय। भोजन सामग्री के साथ–साथ मास्क और डिटॉल साबुन की भी व्यवस्था करनी चाहिए।[2]

पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया था, जो आज भी सही साबित हो रहा है। किसान चिलचिलाती धूप में भी कृषि कार्य कर रहे हैं, और समाज के लिए अनाज, सब्जी–फल, दूध तथा पशुओं के लिए चारे का प्रबन्ध कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ सेना के जवान अपने देश की सीमाओं की रक्षा कर रहें है, वहीं राज्यों के पुलिस बल भी लोगों को जागरुक करके बीमारी से बचाने का प्रयास कर रहे हैं और साथ ही लॉकडाउन का सख्ती से पालन करने मे सरकार का सहयोग कर रहे है।

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। प्रथम् पंचवर्षीय योजनओं के बाद कृषि पर से लगातार सरकार का ध्यान कम होता जा रहा है। जहाँ पहले 70: आबादी गाँवो मे रहकर कृषि कार्य करती थी। अब वही मात्र देश के जी डी पी ने न्यूनतम योगदान कृषि का रहा गया है। अर्थव्यवस्था के द्वितीयक स्त्रोत सेवा का योगदान जी.डी.पी मे अधिकाम हो गया है।

लॉकडाऊन के चलते उद्योग व सेवा क्षेत्र बिल्कुल बन्द होने के कगार पर आ गया है। वही दूसरी ओर कृषि क्षेत्र व खाद्यान्न की आरे देश व दुनियाँ के लोग आस लगाए बैठे है। अब वह दिन फिर से आ गया कि कृषि क्षेत्र पर सरकार को पुनः ध्यान देना चाहिए।

कृषि ही वह क्षेत्र है जिससे दोबारा देश दुनियाँ की अर्थव्यवस्था पटरी पर आयेगी और इस तरह लॉक–डाउन से आयी मंदी से देश –दुनियाँ उबर पायेगी।

निश्कर्ष रूप से गौतम बुद्ध के चार आर्य सत्य की तरफ जाया जा सकता है। हमारी यह दैहिक यात्रा तभी आनन्दमय रह सकती है जब कि हम स्वस्थ होतें। कहा भी गया है कि स्वस्थ तन मे स्वाय मनका निवास रहता है (A Sound Mind Lives in Sound Body) स्वास्थय को उपेक्षित कर दें तो बाकी प्राप्त सारी सम्पतियों को धूलि धूसरित होने में भला क्या समय लगेगा आदमी को अपनी कडी मेहनत व अत्यधिक तनावों से प्राप्तं धन–दौलत अपने बीमार तन को ठीक करने में लगाना पड़ सकता है, इसलिए हरएक को अपने स्वास्थ्य को मूल्य देना बेहद जरूरी है।[4]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2020 पृ0. 72.
2. सत्यकेतु विद्यालंकार प्राचीन भारत की शासन –पद्वति और राजशास्त्र पृ0 18 वर्ष 2016.
3. प्रो0 के ए नीलकण्ड शास्त्री नन्द मौर्य युगीन भारत पृ 129 वर्ष 2000 मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी ।
4. प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2020 पृ.9.

*****